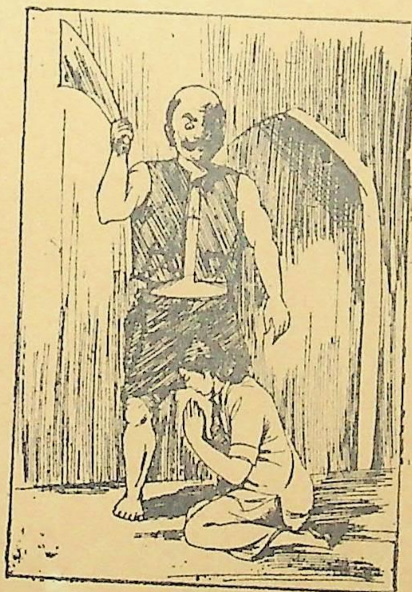
अमर बलिदानी
धर्मवीर
हक़ीक़त राय



जीवन प्रकाश

जीवन

लेखक :—

जीवन प्रकाश 'जीवन'

विप्लव विद्या मन्दिर,

10, कृष्ण नगर, (इस्लामाबाद),

अमृतसर ।

प्रकाशक :—

श्री भोला नाथ जी दिलावरी

प्रधान

केंद्रीय आर्य सभा,

शक्ति नगर, अमृतसर

मूल्य : 1/-

मुद्रक :—

ग्रोवर प्रिंटिंग प्रेस,

दुर्ग्याणा मन्दिर, अमृतसर

धर्मवीर बाल हक़ीकत

सामयिक स्थिति

आज से ढाई सौ वर्ष पहले भारत वर्ष पर मुग़लों का शासन था। दानवता मानवता को निगलना चाहती थी। हिन्दु धर्म का सरेआम मुस्लिम मौलवियों, काज़ियों द्वारा अपमान किया जाता था तथा अत्याचार, अन्याय की रक्तिम आन्धी भयंकर रूप धारण कर निर्दोष तथा निस्सहाय हिन्दू जनता को कुचल रही थी। उस समय मुहम्मद शाह रंगीला का शासन था जो हर समय सुरा-सुन्दरी-विलास में डूबा रहता था। कोई मरे कोई जिए सुथरा घोल बताशे पिए की लोकोक्ति उस पर अक्षरशः चरितार्थ होती थी।

उस समय राज्य की वास्तविक बागडोर धर्मान्ध मुल्लाओं, काज़ियों और क्रूर सूबेदारों के हाथों में थी। मुल्लां और काज़ी इस्लाम के नाम पर जो चाहते शासकों से करवा सकते थे। उन का प्रत्येक अक्षर ब्रह्म-वाक्य के समान था। शासक उन के आदेश के सम्मुख सदैव नतमस्तक रहते थे और मुल्लां तथा काज़ी अपनी मनमानी करते तथा तलवार के बल पर मृत्यु का भय दिखला कर बलात् हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया जाता था। कानून भी मौलवियों तथा काज़ियों का बनाया हुआ ही चलता था जो इस्लाम की दुहाई देकर हिन्दुओं पर मन माने अत्याचार करते। अन्याय का बोलबाला था। यही कारण था कि

हिन्दु मुस्लिम शासकों के अत्याचार से थरथर कांप रहे थे और ऐसा आतंक छाया हुआ था कि कोई भी इस अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध एक शब्द तक भी अपनी ज़ुबान से नहीं निकाल सकता था। हिन्दु संस्कृति को निर्दयता से पांव तले रौन्दा जा रहा था। निर्दोषों के गले नित्य नये सूर्य काटे जा रहे थे।

दृढ़व्रती बालक

ऐसी भयंकर वेला में पंजाब का एक चौदह वर्षीय निडर बालक वीर हकीकत राय अत्याचार के विरुद्ध सीना तान कर खड़ा हो गया तथा हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए उसने विद्रोह कर दिया। उसने निर्भयता से नाद फूंकते हुए घोषणा की कि "वह आत्मा की आज़ादी को नीलाम करने को तैयार नहीं।" क्योंकि वह जानता था कि आत्मा अमर है। वह आर्य बालक कृष्ण का सच्चा अनुयायी तथा पवित्र गीता का दीवाना था। अत्याचार के सम्मुख झुकना पाप है, कायरता है, निर्बलता है। मनुष्य केवल पैदा हो कर मरता ही नहीं बल्कि मर कर भी वह सदा के लिए जीवित रह सकता है, अमरत्व को उपलब्ध कर सकता है।

धर्मान्ध, अन्यायी और अत्याचारी शासकों ने उसे हर प्रकार का लालच दिया। माता पिता ने अपनी ममता तथा पत्नी ने अपने प्यार की दुहाई दी। शासकों ने उच्च पद, अपार धन राशि और यहां तक कि पंजाब के मुसलमान गवर्नर ने उसके साथ अपनी सुन्दर पुत्री का विवाह कर देने

का प्रलोभन भी दिया। यह सभी कुछ तभी होगा यदि वह मुसलमान धर्म को स्वीकार कर ले नहीं तो उस का सिर तन से अलग कर दिया जाएगा।

किन्तु वाह रे धर्म के दीवाने! तेरी दृढ़ भावना पर बलिहार, तूं किसी लालच या भय के सामने अपना धर्म त्यागने को तैयार न हुआ और हिमालय के समान अपने प्रण पर अटल और अचल रहा जबकि ममता ग्रस्त बूढ़े माता पिता ने इकलोती सन्तान होने के कारण उसे धर्म परिवर्तन के लिए विवश भी किया किन्तु उस आर्य बालक ने अपने माता पिता को कहा "मां! जन्म बार बार नहीं मिलता फिर क्यों न इस मानव-जन्म को धर्म की बलि-वेदी पर चढ़ा कर अपने जीवन को सफल कर लूं। आप को तो प्रसन्नता होनी चाहिए कि आप की पावन कुक्षि से एक ऐसे लाल ने जन्म लिया है जो अपने पवित्र हिन्दु-धर्म की रक्षा के लिए सहर्ष अपने प्राणों की आहूति दे कर आप के नाम को चार चान्द लगाने को पवित्र भावना से ओतप्रोत है। विश्वास रखो कि हकीकत (सच्चाई) कभी मर नहीं सकती। फिर नाम भी तो आपने हो रखा है। मां बताओ क्या हकीकत (सच्चाई) भी कभी मर सकती है? यह ब्रह्माण्ड भी हकीकत को मिटा नहीं सकता। हकीकत कभी मृत्यु का ग्रास नहीं बन सकती। यदि यह भी कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी कि स्वयं भगवान भी हकीकत को समाप्त नहीं कर सकते क्योंकि भगवान भी तो स्वयं

हकीकत ही है। हकीकत हकीकत ही रहती है।"

इसी वीर बालक ने जिसका नाम हकीकत था बसन्त के पवित्र त्यौहार पर जामे-शहादत नोश किया और अपने धर्म, देश तथा माता-पिता के नाम को चांद सितारों की भान्ति संसार में रोशन कर स्वयं अमरत्व का प्याला पान किया। इसके बलिदान ने सारी आर्य जाति, हिन्दु संस्कृति तथा धर्मध्वजा को नील गगन से भी ऊंचा फहरा दिया।

जन्म और लालन पालन

इस तेजस्वी तथा तपस्वी वीर बालक का जन्म वीर-प्रसू पंजाब की पवित्र धरती पर सं० 1719 कार्तिक बदी द्वादशी के दिन स्यालकोट के नगर में श्री भागमल खत्री के घर सती साध्वी जननी कौरा की पवित्र कुक्षि से हुआ।

माता पिता दोनों भगवान के सच्चे भक्त थे। अपने धर्म पर उनकी दृढ़ निष्ठा थी। जब तक वह पूजा पाठ न कर लेते अन्न को हाथ तक न लगाते। परमात्मा ने उनको चान्द सा एक बेटा दिया जिसने चान्द की ज्योति के समान ही जहां अन्धेरे घर को आलोकित किया वहां उसने अपने शुभ कृत्यों से धर्म और देश के नाम को भी संसार में रोशन कर दिया।

यह वह समय था जब मुसलमानों का शासन होने के कारण फारसी राज्य की भाषा थी जिससे प्रभावित होकर माता पिता ने बालक का नाम हकीकत राय रख दिया। क्योंकि हकीकत का अर्थ सच्चाई होता है अतः ऐसा प्रतीत

होता है कि बालक माता के गर्भ से ही सच्चाई की भव्य भावना लेकर ही उद्भूत हुआ।

इकलौती सन्तान होने के कारण माता पिता ने अपने लाडले पुत्र का बड़े लाड प्यार से लालन पालन किया। हकीकत बचपन से ही महान मेधावी तथा प्रतिभाशाली बालक था। माता पिता ने शैशव में ही उसको धार्मिक शिक्षा के आभूषणों से अलंकृत किया। उसके रोम रोम में धर्म-प्रेम की भावना भर दी। यही कारण था कि उसने कुछ ही वर्षों में संस्कृत तथा हिन्दी सीख ली। अनेक धर्म ग्रन्थ पढ़ लिए किन्तु गीता से उसे विशेष प्रेम था। गीता का प्रत्येक अक्षर तो उसके रोम रोम में ही समाहित हो गया, मानो रोम रोम ही गीतामय हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि उसका जीवन ही गीता के सांचे में ढल गया हो।

शिक्षा

उस समय मुग़ल शासन होने के कारण राज्य भाषा फारसी थी। बिना फारसी भाषा पढ़े राज्य दरबार में रसाई होना असम्भव था। इसलिए नौकरी के लिए भी फारसी का जानना परम आवश्यक था। इस विचार से हकीकत के माता पिता ने उसे फ़ारसी की शिक्षा दिलवाने के लिए मौलवी साहिब के पास भेज दिया। हकीकत अपनी प्रखर प्रतिभा के कारण थोड़े समय में ही अपने सहपाठियों से आगे निकल गया। जब भी परीक्षा होती तो यह अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहता जिसके कारण उसके मुसलमान

सहपाठी उससे ईर्ष्या करने लगे। एक दिन मौलवी साहिब ने एक मुसलमान विद्यार्थी को पाठ सुनाने के लिए कहा किन्तु उसको पाठ याद न था जिस पर मौलवी साहिब ने उसको डाण्ट डप्ट करते हुए कहा कि "तुझ से तो वह हिन्दु लड़का अच्छा है जो अपना पाठ सरलता से सुना देता है। और तू मुसलमान होकर भी सुना नहीं सकता तुझे शर्म आनी चाहिए। धिक्कार है तुझ पर, तेरी बुद्धि पर, तू तो महामूर्ख है।" अपमानजनक और कटु शब्द सुनकर वह विद्यार्थी पानी पानी हो गया और उसने हक़ीक़त से प्रतिकार लेने की योजना बनाई।

विवाद एवं मिथ्यारोप

समय की विडम्बना समझिये या दुर्भाग्य उसी समय मौलवी साहिब नमाज़ पढ़ने के लिए चले गए। उनकी अनुपस्थिति में विद्यार्थियों ने हुल्लड़ मचाना आरम्भ कर दिया तथा शरारतें करने लगे। किन्तु हकीकत अपने स्वाध्याय में लीन रहा। उसे पढ़ता देख उसके सहपाठी उसे भिन्न भिन्न प्रकार के अभद्र व्यंग करने लगे किन्तु हकीकत ने किंचित ध्यान न दिया। यह देख कर वे सभी और भी जल भुन्न गए तथा उसे इस विचार से कि जब मौलवी साहिब आएं तो हमारी शिकायत न कर दे उसे भुजाओं से पकड़ कर अपने साथ खेलने के लिए विवश करने लगे पर हकीकत ने विनम्रता से कहा "यह विद्यालय है खेल का मैदान नहीं, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम मौलवी

साहिब की अनुपस्थिति में किसी प्रकार की शरारत न करें और अपना पाठ याद करें" पर उन बच्चों के सिर पर तो भूत सवार था वे स्वयं तो पढ़ना नहीं चाहते थे इसलिए किसी अन्य को भी वे पढ़ता नहीं देख सकते थे। जब उन्होंने हकीकत को बहुत तंग किया तो उसने कहा "मित्रो ! मां भगवती का वासता है मुझे तंग मत करो।" भगवती का नाम सुनते ही एक मुसलमान विद्यार्थी लड़के ने हकीकत राय को गाली दे दी, दूसरे ने सारे हिन्दुओं को और तीसरे ने हिन्दुओं के देवी देवताओं को और विशेष रूप से भगवती दुर्गा को गन्दी गालियां निकालनी शुरु कर दीं। यहां तक ही बस न की सभी मिलकर उसे मारपीट भी करने लगे। तब तंग आकर हकीकत ने कहा "दोस्तों यदि यही शब्द मैं आपको बीबी फ़ातमा की शान में प्रयोग करु तो क्या आपको दुख नहीं होगा ?"

"तू कहकर देख" दूसरे ने कहा

"क्यों नहीं" हकीकत ने कहा—"मुझे भी भगवान ने ज़ुबान दी है।" इतना कहते ही हकीकत ने वही शब्द दुहरा दिए। आखिर बच्चा ही तो था और अपने धर्म का भी पक्का। चारों ओर सन्नाटा छा गया मानो प्रलय आ गई हो। ऐसा सुनते ही जैसे आग पर घी डालने से वह और भी अधिक भड़क उठे। वे उसे पहले से भी अधिक बुरी तरह मारपीट करने लगे। वह कक्षा में अकेला था, क्या कर सकता था ? बचारा पिट कर भी खामोश ही रहा।

इतने में मौलवी साहिब भी नमाज़ पढ़कर वापिस लौटे तो मुसलमान लड़कों ने खूब नमक मिर्च लगाकर मौलवी साहिब से शिकायत की कि "इस काफ़र हिन्दु ने रसूलज़ादी को गालियां दी हैं।"

"क्यों हकीकत तू ने बीबी फातमा को गालियां दी हैं?" मौलवी साहिब ने अपनी आंखें लाल पीली करते हुए कहा।

"हां" हकीकत ने दृढ़ता से कहा, "किन्तु पहले इन सब लड़कों ने मुझे, हिन्दुओं और हिन्दु देवी देवताओं को गालियां दी थीं।"

गिरफ्तारी

मौलवी साहिब निर्भयतापूर्वक उत्तर सुनकर स्तब्ध रह गए और उसे इस्लाम की तौहीन (अपमान) समझ तथा बीबी फ़ातमा को गालियां देने के आरोप में गिरफतार करवा कर यह मामला स्यालकोट के हाकिम अमीर बेग की अदालत में भेज दिया। वहां पर भी बालक ने सहर्ष सब कुछ स्वीकार किया।

हाकिम ने मौलवियों और काज़ियों की सम्मति मांगी तो उन्होंने कहा "कि इस्लाम की तौहीन करने वालों के लिए शरह के अनुसार मृत्यु दण्ड लिखा है।"

उस समय मौलवियों और काज़ियों के परामर्श से कानून चलता था। जब यह मुकद्दमा पेश हुआ तो वीर हक़ीकत को रसूलज़ादी की शान में गुस्ताखी के अपराध में

मौत की सज़ा की आज्ञा सुनाई गई। उस समय शाही मुफ़ती काज़ी सुलेमान का मशवरा भी तलब किया गया। उसने भी कुरान शरीफ़ के मुताबक मौत की सज़ा ही बताई या फिर काफ़िर इस्लाम क़बूल कर ले तो जान बखशी हो सकती है।

मुकद्दमा लाहौर में स्थानान्तरित

स्यालकोट का हाकिम यद्यपि अहिन्दु था किन्तु बड़ा न्यायशील और दयालु था। घटना की वास्तविकता को जान इस निर्दोष, मासूम बालक को क्तल करने का साहस न कर सका। इसलिए उसने यह मामला लाहौर के सूबेदार की खिदमत में यह कहकर भेज दिया कि चूंकि यह घटना जनता के दो सम्प्रदायों को धार्मिक भावनाओं से सम्बन्धित है इससिए सूबेदार साहिब स्वय ही इसका फैसला करें।

इस खास मुकद्दमा की सुनवाई के लिए इलाका के सभी लोग ठटकेठट बांध कर लाहौर पहुंच गए।

बालक हकीकत हथकड़ियों तथा बेड़ियों में जकड़े हुए स्यालकोट से लाहौर पहुंचाए गए। काज़ी और मौलवी भी बड़ी संख्या में वहां पहुंच गए। मुकद्दमा समय के शासक के सम्मुख पेश हुआ। दोनों पक्षों की ओर से गवाह पेश हुए। दोनों पक्षों की गवाहियां सुनकर हाकिम असमंजस में पड़ गया किन्तु उसकी मौलवियों और काज़ियों के सामने एक न चली। आखिर लाहौर के सूबेदार ने कहा, "देख

हक़ीक़त, तुमने जो अपराध किया है शरह इस्लाम के अनुसार

उसकी सज़ा मौत है। सभी मुल्लां, मुफ़ती और काज़ी यही फ़तवा देते हैं। किन्तु तुम एक ही सूरत में बच सकते हो अगर तुम अपना धर्म छोड़कर इस्लाम मज़हब को स्वीकार कर लो। मैं न केवल तुम्हारी जान बख्शी करुंगा बल्कि अपनी पुत्री का विवाह भी तुम्हारे साथ कर दूँगा तथा सरकारी दरबार में अच्छी पदवी भी दिलवा दूँगा।"

इतने में भागमल प्रतिष्ठित नागरिकों और पंचों को लेकर अदालत में पहुंच चुका था। मृत्यु दण्ड सुनकर पंचों ने काज़ी साहिब तथा हाकिम से प्रार्थना की कि "जनाब बच्चों का मामला है, यह नासमझ है, इसे मुआफी दे देनी चाहिए। किन्तु सभी प्रतिष्ठित सज्जनों की गिड़गिड़ाहट नकारखाना में तूती की आवाज़ सिद्ध हुई। काज़ियों पर कुछ भी असर न हुआ। निराशाजनक उत्तर सुनकर ममता वश पिता ने पुत्र से कहा, "बेटा तुम मुसलमान हो जाओ। अगर तू ज़िन्दा रहा तो हमारी आंखें तो तुझे देख कर अपने दिल की प्यास बुझा लेंगी।"

हक़ीकत का उत्तर

यह सुनते ही हक़ीकत का चेहरा तमतमा उठा परन्तु वह नम्रता से बोला, "पिता जी, आप भी ऐसा ही कहने लगे। किन्तु आप बताएं कि क्या मुसलमान बन जाने पर मैं कभी नहीं मरुंगा ? अगर एक न एक दिन मरना ही है तो फिर चन्द दिन के जीवन के लिए धर्म छोड़ने का क्या लाभ ?" "बड़ा लाभ होगा

हकीकत", काज़ी ने बीच में बात काटते हुए कहा, "शाही दरबार में इज्ज़त, बेशुमार दौलत और...... "

'बस इतना ही !' हकीकत राय हंस पड़ा, "इतने के लिए अपना धर्म छोड़ दूं ? काज़ी साहिब ! धर्म कभी बदला नहीं जाता वह तो अटल होता है। यह जीवन भर के लिए साथ रहता है और मरने पर भी हमारा संग नहीं छोड़ता। हां चोला तो बदल सकता हूं धर्म नहीं। मुझे बतलाओ—

"क्या काट सकेगी ओ काज़ी, बतला तेरी तलवार मुझ,
है शान मृत्यु से वीरों की धर्मार्थ मृत्यु स्वीकार मुझे।
क्या जानता नहीं हकीकत हूं हकीकत को मिटाना मुश्किल है,
लाखों भी जलधर छा जाएं दिनकर को छिपाना मुश्किल है।
मेरे श्वासों में है कृष्ण बसा मैं गीता का दीवाना हूं,
मैं धर्म की पावन ज्योति पर जलने वाला परवाना हूं।
नहीं किंचित भय कुछ मृत्यु का यह अमर आत्मा है मेरी,
कुछ भी न बिगाड़ सके जिस का अन्यायी तीखी तेग़ तेरी।
न पानी इसे गला सकता न अग्नि इसे जला सकती,
न बान्ध इसे जंजीर सके न इस को अनिल सुखा सकती।
फिर डरुं भला क्यों मृत्यु से कहती मुझ को कुर्बानी है,
जिसके अक्षर अक्षर में निहित अमरत्व की अमर कहानी है।

मैं अपने धर्म में कोई दोष नहीं देखता। यही धर्म तो आदि सृष्टि से चला आ रहा है फिर इस सत्य सनातन धर्म से अपना मुख क्यों मोड़ूं। अगर आप का खुदा चाहता

तो मुझे मुस्लिम परिवार में जन्म दे सकता था।"

अमर बलिदान

काज़ी वीर तथा निर्भीक बालक की ओजस्वी वाणी सुन कर चकित रह गया और अपने मुख से कुछ न बोल सका तथा लाहौर के नाज़म खान बहादुर ने मृत्यु की सज़ा बहाल रखी। चुनांचि 1734 में पवित्र बसन्त महोत्सव पर हक़ीक़त को वधशाला में ले जाया गया। सारे नगर में हाहाकार मच गया। विशाल जनसमूह वधशाला में पहुंच गया। जल्लाद ने एक बार फिर हक़ीकत से कहा "औ नादान भोले बालक! तेरी मासूम सूरत को देख कर मेरे दिल में दया का सागर उमड़ आया है। तू आने वाली अपनी जवानी पर तरस खा"। किन्तु हक़ीकत, मुस्कराते हुए बोला—

"काट सकते हो तो बाहर का हकीकत काटो,
काटती असल हकीकत को यह तलवार नहीं।"

काज़ी ने एक बार फिर मुसलमान हो जाने के लिए कहा किन्तु हक़ीकत ने दृढ़ता से उत्तर दिया—

"काज़ी साहिब मैं धर्म नहीं छोड़ सकता दुनिया छोड़ सकता हूं।" इतना सुनते ही मुल्लां ने काज़ो को संकेत किया और काज़ी ने जल्लाद को। जल्लाद ने तलवार उठाई और हकोकत ने मुस्कराते हुए अपना शीश यह कहते हुए झुका दिया—

"सरे तसलीमखम है जो मिज़ाजे यार में आए"

जल्लाद ने इस फूल जैसे कोमल सुन्दर मासूम बालक को जब अपनी तलवार के नीचे देखा तो उस का पाषाण-हृदय मोम की भान्ति पिघल गया और तलवार उसके हाथ से छूट कर धरती पर गिर पड़ी। काज़ी और मुल्लां की त्योरियां चढ़ गई। सारी भीड़ में हलचल मच गई किन्तु एक ही क्षण में सब ने विस्मित हो कर देखा कि हक़ीकत स्वयं तलवार उठा कर जल्लाद के हाथ में यह कहता हुआ दे रहा है कि "जल्लाद घबराओ मत अपने कर्त्तव्य का पालन करो क्यों कि तुम दूसरों के दास हो और दास के लिए अपने स्वामी का आदेश मानना ही धर्म है। मैं अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दे रहा हूं तो तुम भी अपने धर्म को पालो इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं"।

जल्लाद ने तलवार थामी तो हक़ीक़त की झुकी हुई गर्दन को एक ही झटके में धड़ से अलग कर दिया। एक तेज़ रक्तधार पृथ्वी पर बह निकली जो हकीकत का दिव्य सन्देश देती हुई अमृतधारा का काम कर गई जो आज तक भी बसन्त के पवित्र पर्व पर हिन्दु जाति में अमरत्म की भावना का संचार कर रही है और युगों युगों तक करती रहेगी। हकीकत तो यह है कि—

मासूम की गर्दन पर खंजर जो चला उसे भी दर्द हुआ,
मानवता रोई सहमी बसन्त फूलों का रंग भी जर्द हुआ।
प्रति वर्ष सहर्ष बसन्त ऋतु हकीकत की जगाने आती है,
सुरभित मुस्काते फूल वही उसे भेण्ट चढ़ाने आती है।

मर कर भी ओझल हो न सका यश चमका चान्द सितारों में,
भर दिया निराला रंग जिसने जीवन की नवल बहारों में।

ज्ञान परीक्षा

1 हक़ीकत राय कौन था ?
2 उसका जन्म कहां हुआ ?
3 उसके माता पिता का क्या नाम था ?
4 उसको किस धर्म ग्रन्थ से अधिक प्रेरणा मिली ?
5 माता पिता ने उसे कैसी शिक्षा दी ?
6 उसे मौलवी के पास पढ़ने क्यों भेजा गया ?
7 उसके सहपाठियों ने उसे क्यों पीटा ?
8 सहपाठियों के साथ विवाद किस कारण हुआ ?
9 मौलवी ने उसे गिरफ्तार क्यों करवाया ?
10 क्या हक़ीक़त को बन्दी बनाना उचित था ?
11 हक़ीक़त को किस की अदालत में पेश किया गया ?
12 पहले हाकिम ने मुकद्दमा लाहौर क्यों भेजा ?
13 लाहौर के सूबेदार ने हक़ीकत को क्या कहा ?
14 हक़ीक़त ने उस को क्या उत्तर दिया ?
15 माता पिता ने किस कारण अपने बेटे को मुसलमान होने का कहा और पुत्र ने उन को क्या उत्तर दिया ?
16 जल्लाद की तलवार नीचे क्यों गिर पड़ी ?
17 हक़ीक़त ने तलवार उठा कर जल्लाद को देते समय क्या कहा ?
18 रक्त की बहती धार ने क्या सन्देश दिया ?
19 इस वीर के बलिदान से आप को क्या शिक्षा मिलती है ?
20 बाल हक़ीक़त ने अपने जीवन का बलिदान किस लिए दिया ?



युग की मांग

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के प्रधान श्री भोला नाथ जी दिलावरी की प्रेरणा से श्री जीवन प्रकाश जी 'जीवन' ने 'धर्मवीर हक़ीक़त' नामक पुस्तिका लिख कर बच्चों में धर्मानुराग, जातीय स्वाभिमान और आत्मगौरव की भावनाएं उद्‌बुद्ध करने की दिशा में प्रशंसनींय प्रयास किया है। बालक हक़ीक़त राय का बलिदान हमारे इतिहास की एक ऐसी अविस्मरणीय घटना है जो सदियों से जातीय जीवन को धर्म चेतना से अनुप्राणित करती आ रही है। पुण्य श्लोक वीर हक़ीक़त राय का चरित हम सब के लिए के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। जातीय मान मर्यादा को अक्षुण्ण बनाने तथा धर्म-ध्वजा को ऊंचा उठाने के लिए ऐसे प्रेरक प्रसंगों का प्रकाशन इस युग की अवश्यक मांग है।

भवदीय :
नन्द किशोर आर्य
एम. ए.
महामन्त्री :
केन्द्रीय आर्य सभा,
शक्ति नगर, अमृतसर